मध्यप्रदेश में सहरिया जनजाति : एक विस्तृत अध्ययन

डॉ दीप्ति अग्रवाल सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा
मोबाइल – 9826870607, मेल आईडी – dipti2012-agrawal@gmail-com
श्रीमती शर्मिला मीणा सहायक प्राध्यापक. वाणिज्य, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा. मेल आईडी –meenasharmila87@gmail-com मोबाइल –8962560052

सारांश

भारत देश में आदिवासी जनजाति समूह एक ऐसा समूह है जो एक निश्चित क्षेत्र में स्वयं की सभ्यता, संस्कृति रहन–सहन और भाषा की परिधि में निवास रखते हैं तथा विकास की दृष्टि से सबसे पिछड़े हुए होते हैं ।सहरिया जनजाति अत्यंत प्राचीन है इसका उल्लेख वैदिक ग्रंथों, बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। ऐतिहासिक होने के बावजूद वर्तमान समय में भी जंगलों आसपास के गांवों में इनका अस्तित्व आज भी कायम है। अशिक्षित ,आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण यह जनजाति अत्यंत पिछड़ी हुई है। पारंपरिक रहन–सहन ,धार्मिक मान्यताएं,जादू टोना आदि पर आज भी इनका विश्वास है। वनोपज जीवन का मूल आधार है पर वह भी दलाल के माध्यम से विक्रय होने के कारण केवल मजदूर बनकर रह गए हैं। पूरे विश्व में परिवर्तन की लहर में सहरिया जनजाति अपनी संस्कृति को भूलती जा रही है जिसे सहेजने की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में सहरिया जनजाति के आर्थिक धार्मिक सामाजिक जीवन शैली को जानने की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये शोध का विषय चुना गया है।

मुख्य शब्द-सहरिया जनजाति, ऐतिहासिक, सामाजिक योजनाये

प्रस्तावना

भारत विविधताओं का देश है जहाँ हर जगह विभिन्न संस्कृतियों के रंग बिखरे हुए है। इसी विविधता का लगभग 21.09 प्रतिशत भाग आदिवासी जनजातियों की संस्कृति से सरोबार है। मध्य प्रदेश भौगोलिक दृष्टि से देश के मध्य में स्थित होने के कारण विभिन्न जनजातियों की जीवन शैली और संस्कृतियों को अपने अंदर समेटे हुए हैं। भारत सरकार द्वारा निर्धारित सूची के अनुसार यहां 43 अनुसूचित जनजातियां अपने समूह के साथ निवास करती है जिनकी संख्या लगभग 1 करोड़ 53 लाख 16 हजार 784 है ।यह आबादी देश की जनजातीय आबादी का 14.64 प्रतिशत है मध्यप्रदेश में भील, भिलाला ,बारेला,पटेलिया, बैगा कोरकु गोंड बहुत सी जनजाति है जिसमें बैगा ,भारिया(पातालकोट क्षेत्र)और सहरिया भारत सरकार द्वारा घोषित विशेष पिछड़ी जनजातियां हैं। सहरिया मध्य प्रदेश की उन जनजातियों में से एक है जो विकास की दृष्टि से अत्यंत पिछड़ी हुई और शहरीकरण, तकनीकी बदलाव के कारण अपनी पहचान खोती जा रही है। इन्ही जनजातियों में से सहरिया जनजाति का अध्ययन कर इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को उजागर करने का पूरा प्रयत्न किया है ।

उदेश्य

1 सहरिया जनजाति का ऐतिहासिक, भौगोलिक अध्ययन।
2 सहरिया जनजाति का सामाजिक व शैक्षणिक अध्ययन।
3 मध्यप्रदेश सरकार द्वारा सहरिया जनजाति के लिए संचालित योजनाओं का अवलोकन।

सहरिया जनजाति का ऐतिहासिक परिदृश्य

सहरिया जनजाति के सहरिया शब्द की उत्पत्ति 'सहर' से हुई है जिसका अर्थ जंगल होता है।

क्रमांक	प्रचलित अवधारणा	आशय
1	सहरिया	'स' का अर्थ साथी तथा ' हरिया' अर्थ शेर इस प्रकार शेर का साथी
2	सकहर	जंगल
3	सौर या सबर	कुल्हाड़ी
4	ब्रह्मा का श्राप	मनुष्य की भीड़ भाड़ से अलग रहकर एकांत व जंगल में निवास
5	सहरिया	भगवान द्वारा उनके शरीर के मेल से उत्पन्न
6	सौरी, शबरी	रामायण समकालीन, शबरी वंशज

सहरिया जनजाति जिसे– सहर, सबर, सौर, सहरिया ,सेहलिया आदि विभिन्न नामों से जाना जाता है इस जनजाति के लोग अपने पूर्वजों के बारे में अनभिज्ञ हैं। केवल वृद्ध व जानकार लोगों की कथा व धुंधली यादों को एकत्रित कर उनके इतिहास को सारांश किया गया है।

इस प्रकार सहरिया जनजाति के उद्भव के संबंध बहुत सी अवधारणाएं प्रचलित है जिससे हम कह सकते है कि कही ना कही सभी का आशय यही है कि यह जंगलों में निवास करने वाली तथा विकास के नजरिये से बहुत पीछे है।

मध्य प्रदेश में भौगोलिक परिदृश्य

यह मध्य प्रदेश की पिछड़ी जनजाति है। मध्य प्रदेश के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में, मुरैना व ग्वालियर के पूर्व में शिवपुरी तथा दक्षिण में गुना जिले में सहरिया जनजाति का निवास है। मध्य प्रदेश के अलावा राजस्थान की एकमात्र विशेष पिछड़ी जनजाति सहरिया ही है जो कि वारां जिले की शाहाबाद व किशनगंज तहसील में निवास करती है। भौगोलिक दृष्टि से देखें तो सहरिया जनजाति अत्यंत लघु पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करती है। भारत की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत 8.63 है तथा मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जनजाति 21.0 प्रतिशत है और इस जनसंख्या में विशेष पिछड़ी जनजाति का प्रतिशत 7.98 है सहरिया जनजाति ग्रामीण क्षेत्रों में 50.97 प्रतिशत तथा नगरीय क्षेत्रों में 49.07 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

सहरिया जनजाति

(जनसंख्या वर्ष 2011 के अनुसार)

विवरण	व्यक्ति	पुरुष	महिला
ग्रामीण	614958 (50.97)	316541	298417
शहरी	591460 (49.07)	304277	287183
योग	1206418	620818	585600

Appendix District Wise Scheduled Tribe Population, pp 3

सामाजिक परिदृश्य

सहरिया जनजाति का सामाजिक संगठन जाति पंचायत के द्वारा किया जाता है जो कि पूरे समुदाय को संगठित रखती है। यह समुदाय अपने बनाये नियमों का पालन करता है। सहरिया जनजाति वन औषधियों की पहचान और उपचार में विशेष रूप से दक्ष है। सामाजिक व्यवस्था में गोत्रों का विशेष महत्व है। समगोत्रीय विवाह सभी जनजातियों में वर्जित है। इस जनजाति में लड़की का जन्म शुभ माना जाता है। गोदना प्रथा प्रचलित है परंतु पुरुष हेतु गोदना वर्जित है। इस जाति के लोग महुआ के फलों से बनी शराब पीते हैं। सहरिया समाज में गोत्र में ऊंच–नीच की भावना पाई जाती है इसमें चौहान गोत्र को सबसे उच्च माना जाता है। चौहान गोत्र के भी दो प्रकार हैं जिसमें साहू चौहान वह रखवीटर चौहान होते हैं। साहू चौहान उच्च माने जाते हैं

सहरिया जनजाति में एक विवाह प्रथा प्रचलित है। परिवार का स्वरूप पितृसत्तात्मक होता है महिलाओं को उच्च दर्जा प्राप्त नहीं है । महिलाओं का मंदिरों में प्रवेश वर्जित है। घर के कार्य करना ही उनका मुख्य धर्म माना जाता है । सहरिया जनजाति के कुल देवता तेजाजी हैं तथा कुल देवी कोडिया है। जनजाति के इष्टगुरु ऋषि वाल्मीकि है।

सहरिया जनजाति की बस्ती सहराना तथा गांव सहरोल कहलाता है। इसके मुखिया को कोतवाल से संबोधित किया जाता है। ये लोग (टोपा, गोपना, कोरुआ) घने जंगल में पेड़ों पर मचाननुमा झोपड़ी में मिट्टी, पत्थर,लकड़ी घास फूस बने घरों तथा टापरी में रहते हैं। सहरिया जाति के पुरुष अंगरखी, सलका व साफा (खफ्टा) व पंछा धारण करते हैं तथा महिलाएं रेजा धारण करती है। सहरिया जनजाति के लोग विभिन्न त्योहारों पर नाचते गाते है। होली के अवसर पर फाग व राई नृत्य तथा दीपावली पर हीड़ा गाने का रिवाज है।

सहरिया जनजाति का धार्मिक परिक्षेत्र

भारतीय संस्कृति में 36 करोड़ देवी देवताओं की मौजूदगी का उल्लेख मिलता है। धर्म में आस्था और मान्यताएं हर वर्ग को नकारात्मक सोच और गलत कार्य करने से बचाती है। सहरिया जनजाति के लोगों के लिए भी ईश्वर में आस्था और अलग–अलग समय पर विभिन्न देवी–देवताओं का पूजन किया जाता रहा है जो इस प्रकार है

क्र.	देवी तथा देवता	आस्था तथा विश्वास
1	आसमानी माता	अनिष्ट से बचाव के लिए (इस पूजन का प्रसाद केवल परिवार के सदस्य ही ग्रहण करते हैं)
2	गैलहरी माता	गांव के बाहर पूजा (गांव में भूत प्रेत के प्रवेश पर रोक लगाने हेतु)
3	बीजासेन माता	युद्ध की देवी
4	बरवासन माता	कार्य सिद्धि हेतु (बरगद के पेड़ के नीचे माता का वास)
5	कंकाली माता	महामारी, देवीय प्रकोप से बचाने हेतु
6	कैला माता	आस्था व विश्वास की देवी
7	खेड़ माता	विवाहित दंपत्ति को गृहस्थ जीवन की सफलता हेतु
8	तेजाजी महाराज	इष्टदेव सर्पदंश से रक्षा करने वाले
9	भूमिया	बीमारियों व संकट से मुक्ति हेतु
10	भैरोंबाबा,नरसिंह बाबा	पुत्र प्राप्ति हेतु
11	हीरामन देव	परिवार व पशुधन की रक्षा हेतु
12	दरेठ बाबा	बच्चों का मुंडन संस्कार
13	नाहर देव	खेत की मेढ़ पर निवास
14	कारस देव	विष सोखने वाले देवता
15	बूढ़ादेव	बच्चों के जीवन की सुरक्षा हेतु

सहरिया जनजाति का आर्थिक पहलू

इस धरती पर प्रत्येक प्राणी को अपने अस्तित्व को कायम रखने की महती आवश्यकता होती है भोजन वस्त्र और आवास ।सहरिया जनजाति प्राकृतिक संपदा पर आधारित होने से हमेशा गरीबी का सामना करते रहे हैं। यदि मौसम के कारण उत्पादन ना हो तो ऋण लेकर अपना कार्य करते हैं। स्वयं की भूमि ना होने से दूसरों के खेतों में मजदूरी व खदानों में कार्य करते हैं। यह जनजाति भरण–पोषण के लिए काम करती आ रही है। परिवार का प्रत्येक सदस्य आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करता है। वर्तमान में औद्योगिकीकरण सरकारी प्रयासों और शिक्षा से जागरूकता बढ़ी है अब वे वनोपजके मूल्यको समझने लगे हैं साथही फैक्ट्री दफ्तरों आदिमें कार्य करने लगे हैं।

सहरिया जनजाति की शैक्षणिक पहलू

सहरिया जनजाति गरीबी और आर्थिक विपन्नता के कारण शिक्षा से वंचित ही रही है। परिवार ,भोजन की व्यवस्था से अलग करने की स्तिथि में नहीं रहता था यहाँ शिक्षा का प्रतिशत अन्य सभी आदिवासी जनजातियों से कम ही रहा है। सहरियो का वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर कोई विश्वास नहीं है। उनका मानना है की शिक्षा कोई रोटी नहीं दे सकती, शिक्षा समय की बर्बादी है। इस मान्यता में अब सरकार द्वारा चलायी जा रही अलग अलग योजनाओं के कारण परिवर्तन आ रहा है जो की विकास का सूचक है। इस परिवर्तन से निश्चित ही सहरिया जनजाति की सोच, समय, जीवन शैली, और रहन सहन में सुधार होगा।

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा आदिवासी जनजातियों के लिए चलाई जाने वाली योजना

आहार अनुदान योजना

प्रदेश के विशेष पिछड़ी जनजाति में बैगा, भारिया और सहरिया परिवार की महिला मुखिया के बैंक खाते में प्रतिमाह ₹1000 की राशि जमा की जाती है। यह योजना वर्तमान में 15 जिलों में चलाई जा रही है।

आकांक्षा योजना

यह योजना अनुसूचित जनजाति वर्ग के कक्षा 11वीं और 12वीं के प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाएं जैसे नीट, जेईई की तैयारी के लिए कोचिंग एवं रहने की व्यवस्था की जाती है।

प्रतिभा योजना

इस योजना के अंतर्गत आईआईएम तथा एनडीए की परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रवेश पर ₹50000 की राशि तथा अन्य परीक्षाएं नीट, NIIT, FDDI, NIFD, IIM में प्रवेश लेने पर ₹25000 की राशि प्रदान की जाती है।

आवास सहायता योजना

इस योजना के अंतर्गत महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले अनुसूचित जाति, जनजाति के जो विद्यार्थी अपने घर से अन्य शहर में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उन्हें संभाग स्तर पर रुपए 2000 प्रतिमाह जिला स्तर पर 1250रुपए प्रति माह तथा विकास खंड एवं तहसील स्तर पर रुपए 1000 प्रति माह की वित्तीय सहायता दी जाती है।

विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति

मध्य प्रदेश में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को विदेश के उच्च शिक्षा संस्थान में अध्ययन के लिए सहायता प्रदान की जाती है।

प्री एवं पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति

अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के लिए प्रदेश के 89 जनजाति विकास खंडों में प्राथमिक से लेकर उच्चतर माध्यमिक शाला आयोजित की जा रही हैं जिसमें विद्यार्थियों को प्री एवं पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति दी जा रही है।

अखिल भारतीय सेवाओं के लिए कोचिंग एवं प्रोत्साहन

अनुसूचित जनजाति के ऐसे विद्यार्थी जो सिविल सेवा परीक्षा में कोचिंग प्राप्त कर रहे हैं उन्हें वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाती है साथ ही जिन विद्यार्थियों ने सिविल सेवा परीक्षा की प्राथमिक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है उन्हें रुपए 40000 तथा मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थी को रुपए 60000 तथा इंटरव्यू पास करने पर रुपए 50000 की राशि दी जाती है।

जनजाति लोक कला कृतियों एवं उत्पादों की जी आई टैगिंग

जनजाति लोक कला कृतिका एवं उत्पादों को लोकप्रिय बनाने तथा उन उत्पादों से लाभ और आए दिलाने के उद्देश्य से उनकी जी आई टैगिंग कराई जा रही है।

प्री प्राइमरी कक्षाएं प्रदेश के आवासीय विद्यालयों में कंप्यूटर लैब तैयार किए गए हैं सभी गुरुकुल को एकलव्य विद्यालयों में अपग्रेड किया गया है जिसे सीबीएसई बोर्ड से मान्यता दिलाई गई है। विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा सहरिया भारिया वाले जिलों में 38 आश्रम शालाओं में पायलट प्रोजेक्ट रूप में प्री प्राइमरी कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है।

मध्यप्रदेश में पिछड़ी जनजातियों का अध्ययन

योजना	लाभार्थी	राशि
आहार अनुदान योजना	23 लाख 242 हितग्राहियों	171 करोड़ 80 लाख रुपए की राशि
आकांक्षा योजना	724विद्यार्थियों	
प्रतिभा योजना	50 विद्यार्थियों	
आवास सहायता योजना	45 हजार विद्यार्थियों	60 करोड़ 96 लाख रुपये
विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति	5 विद्यार्थियों	147 लाख रुपए
प्री एवं पोस्ट मेट्रिक छात्रवृत्ति	डेढ़ लाख से ज्यादा विद्यार्थियों	206 करोड़ 16 लाख रुपए की छात्रवृत्ति
अखिल भारतीय सेवाओं के लिए कोचिंग एवं प्रोत्साहन	184 विद्यार्थियों	37 लाख रुपये
जनजातीय लोक कलाकृतियों एवं उत्पादों की जीआई टैगिंग	प्रथम चरण में 10 जनजाति लोक कलाकृतियों एवं उत्पादों की जीआई ट्रैगिंग	

जनसंपर्क विभाग मध्यप्रदेश शासन 2021–2022

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा विशेष पिछड़ी जनजाति समूह में सहरिया जनजाति के लिए चार आदिम जाति समूह विकास अभिकरण बनाए गए हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को अंतिम लक्षित व्यक्तियों तक पहुँचाना है ।

अभिकरण मुख्यालय	सम्मिलित जिले कार्यक्षेत्र
श्योपुर	शिवपुर मुरैना भिंड
शिवपुरी	शिवपुरी
गुना	गुना अशोकनगर
ग्वालियर	ग्वालियर दतिया

उपसंहार

सहरिया जनजाति के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि नाम के अनुसार जंगल में रहने के कारण अत्यंत पिछड़ी जाति रही है वहीं दूसरी तरफ वैश्वीकरण तकनीकी परिवर्तन की लहर से परंपरा और मान्यताओं के साथ–साथ शहरी रहन–सहन की तरफ झुकाव होता जा रहा है। जीवन निर्वाह वनोपज पर निर्भर न रहकर अन्य कार्यों की तरफ मुड़ गया है। शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों का लाभ लेकर नए आयाम नयीं सोच को अपनी जीवनशैली में समाहित करने का प्रयास कर रहे हैं।

आज की सहरिया जनजाति मुश्किलों पर विजय पाने का अदम्य साहस रखती है ,अधिकारों के प्रति चेतना है ,बदलते बहुआयामी जीवन की ओर बढ़ते हुए कदम है जहां सृजनात्मकता, आर्थिक संपन्नता, पद ,प्रतिष्ठा मौजूद है इसी बदलाव की ओर सहरिया जनजाति का रुझान है जो कि एक सार्थक पहल है ।नवीनता के साथ संस्कृति और परंपराओं की गौरवशीलता भी समाहित रहे तो यह विकास सजीव है।

संदर्भ

1 A plan for the development of sahariyas (Primitive Tribe of mp) Tribal Area Development Planning M.P. 1992-93

2 तिवारी शिवकुमार श्मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृतिश मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2010

3 हसनैन नदीम जनजातीय भारत जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर नई दिल्ली 2001

4 अमानुल्लाह मोहम्मद श्सहरिया जनजाति का संक्षिप्त मानव शास्त्रीय अध्ययन आदिम जाति अनुसंधान संस्थान भोपाल मध्य प्रदेश 1977

5 पी आर नायडू भारत के आदिवासी राधा पब्लिकेशन

6 डॉ हरिभचंद्र उप्रेती –भारतीय जनजातीय संरचना एवं विकास, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर

7 सहरिया, बसंत निर्गुणे , मध्यप्रदेश आदिवासी लोककला मंडल , भोपाल (मध्यप्रदेश) 1990

8 सहरिया जनजाति की आर्थिक , शैक्षणिक स्थिति पर नोट अतिरिक्त कलक्टर शाहाबाद, वारां (राजस्थान) 2006

https://www-mpinfo-org/Home/ArticleDetails\newsid¾211111S2&fontname¾Mangal&LocID¾32&pubdate¾11/11/2021